(1)

10/7/20

B.A. Part I
Hindi Hons
मध्यकालीन
हिन्दी काव्य
जायसी

डॉ० अरुणा कुमारी
एसोसिएट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
एस०एन० सिन्हा कॉलेज,
जहानाबाद

प्रश्न:- नागमती के वियोग वर्णन की विशेषताओं का उल्लेख करें।

उत्तर:- पदमावत जायसी की महत्वपूर्ण रचना है। इसमें वियोग श्रृंगार की प्रधानता है। जायसी के पदमावत में नागमती का वियोग वर्णन हिन्दी साहित्य के वियोग वर्णन में सबसे उत्कृष्ट है।

नागमती का विरह-वर्णन जायसी ने अद्वितीय रूप में किया है। वह विरहोन्माद की अवस्था में वाल्मीकि, कालिदास आदि के नायकों के समान अपना विरह-निवेदन पशु, पक्षी, पेड़, पौधों सभी से कहती फिरती है। जायसी की नायिका का विरह निवेदन अन्य कवियों के समान अरण्यरोदन मात्र नहीं रह जाता। उन्होंने जिस प्रकार मानव के हृदय में पशु-पक्षियों की सहानुभूति प्राप्त करने की सम्भावना की है उसी प्रकार पशु-पक्षियों के हृदय में सहानुभूति के संचार की भी। तभी तो नागमती की दशा पर एक पक्षी को दया आती है और वह उसके दुःख का कारण पूछकर उसका संदेशा ले जाने को तैयार होता है।

क्रमशः -

November 2016

12 Saturday 317-049

B.A. I year 10/7/20 (2) क्रमशः —
Hindi Hons

जायसी

हो जाता है। नागमती ने उस पक्षी के द्वारा जो सन्देश भेजा है वह मान-गर्व से रहित, सुरत-भोग की कामना से अलग, उदात्त त्याग, प्रेम-व्यंजक एवं मर्मस्पर्शी है —

पदमावति सों कहेहु बिहंगम।
कंत लोभाइ रही करि संगम॥
मोहि भोग सौं काज न बारी,
सौंह दिस्टि कै चाहनहारी॥

मनुष्य ही नहीं, पशु-पक्षी आदि भी किस प्रकार उसके दुःख में दुःखी और सुख में सुखी होते हैं इसे भी जायसी ने बड़ी ही कुशलतापूर्वक सहृदयता से दिखलाया है। नागमती की विरह-~~[illegible]~~ पर-वाह से उसकी फुलवारी के जो पेड़-पौधे सूखे मुरझाए पड़े थे वे नागमती के चरण रखते ही खिल उठते हैं —

पुनि ही नागमती कै बारी।
भँवरा फूल फूलि फुलवारी॥
जायत पंखि रहे सब दहे।
सबै पंखि बोले गहगहे॥

जायसी द्वारा विरहजन्य कृशता का वर्णन अत्युक्तिपूर्ण होते हुए भी उपहासास्पद न होकर गंभीर ही है —

हाड़ भए सब किंगरी,
नसैं भईं सब ताँति।
रोवँ रोवँ तें धुनि उठै,
कहौं बिथा केहि भाँति॥

13 Sunday 318-048

क्रमशः —

पद्मावत में नागमती विरह-वर्णन के अन्तर्गत 'बारहमासा' भी आया है जिसमें वेदना का अत्यन्त निर्मल और कोमल स्वरूप, हिन्दू दाम्पत्य जीवन का अत्यन्त मर्मस्पर्शी चित्रण देखने को मिलता है। ~~अषाढ़~~ आषाढ़ माह का चित्र यहाँ बारहमासे के अन्तर्गत प्रस्तुत कर रहा हूँ —

चढ़ा आषाढ़, गगन घन गाजा।<br>
साजा बिरह दुंद दल बाजा॥<br>
खड़ग-बीज चमकै चहुँ ओरा।<br>
बुंद-बान बरसहिं घनघोरा॥<br>
ओनई घटा आइ चहुँ फेरी।<br>
कंत! उबारु मदन हौं घेरी॥

जायसी ने नागमती के विरह-वर्णन को एक स्वाभाविक स्त्री के रूप में प्रस्तुत किया है, रानी के रूप में नहीं। इसका कारण नागमती के विरह-वर्णन की मार्मिकता और बढ़ जाती है। नागमती का विरह-वर्णन फारसी के आशिक-माशूकों की भाँति निर्लज्ज प्रलाप करने वाला नहीं है वरन एक भारतीय गृहस्थ की नारी की स्वाभाविक विरह वर्णन है। यथा —

पुष्य नक्षत्र सिर ऊपर आवा।<br>
हौं बिनु नाह, मंदिर को छावा॥

इसी प्रकार बरसात आने पर शरीर के रूपकों द्वारा गृहस्थों की चिंता और आयोजना की सुन्दर रोमांचक दिखायी पड़ती है —

क्रमशः —